नया ज्ञानोदय

दिसम्बर 2025–जनवरी 2026
मूल्य : 50 रुपये

भारतीय ज्ञानपीठ

भारतीय ज्ञानपीठ
संस्थापक
श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

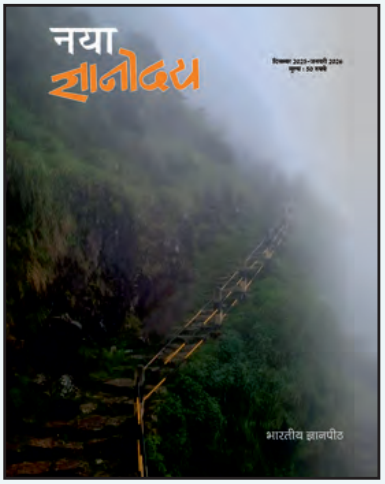

अंक: 236
दिसम्बर 2025-जनवरी 2026

सम्पादक
मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक
महेश्वर, प्रभाकिरण जैन

सम्पादकीय परामर्श
सुधांशु गुप्त

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक: भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोनः 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेलः nayagyanoday@gmail.com,
bookclub@jnanpith.net,
gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइटः www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya
A Literary Bi-monthly Magazine
Editor: Madhu Sudan Anand
Language: Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,
New Delhi-110 003

मूल्यः
50 रुपये + 16 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए:
वार्षिक (6 अंक): 400 रुपये (डाक खर्च सहित, साधारण डाक से)
वार्षिक (6 अंक): 730 रुपये (डाक खर्च सहित, रजिस्टर्ड डाक से)

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ' (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से, उपर्युक्त पते पर चेक या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें।

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

आवरण व साज-सज्जाः महेश्वर, भीतरी रेखांकनः बंशीलाल परमार

www.jnanpith.net

शुक्ल को उनके आवास पर दिया गया ज्ञानपीठ

प्रसिद्ध साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल को शुक्रवार (21 नवंबर) को रायपुर स्थित उनके आवास पर ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वास्थ्य संबंधी कारणों के चलते ज्ञानपीठ के महाप्रबंधक आर एन तिवारी और वरिष्ठ लेखा अधिकारी धर्मपाल कंवर ने रायपुर आकर उन्हें पुरस्कार और सम्मान राशि का चेक भेंट किया। 59वें ज्ञानपीठ पुरस्कार के साथ ही उन्हें वाग्देवी की प्रतिमा भी दी गई। संभवतः इतिहास के सबसे छोटे इस सम्मान कार्यक्रम में हिन्दी के सबसे बड़े कवि, कहानीकार और उपन्यासकार को सम्मानित करना एक अलग-सा अनुभव रहा। विनोद कुमार शुक्ल का स्वास्थ्य खराब होने की वज़ह से यह अनुरोध किया गया था कि एकदम सादे समारोह में शुक्ल को यह सम्मान दिया जाए। सम्मान ग्रहण करने के बाद शुक्ल ने अपने पाठकों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा, जब हिन्दी सहित अन्य भाषाओं पर संकट की बात यहाँ-वहाँ सुनाई पड़ती है, तब भी मुझे यह विश्वास है कि नई पीढ़ी हर भाषा और विचारधारा का सम्मान करेगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि किसी भाषा या अच्छे विचार का नष्ट होना, मनुष्यता का नष्ट होना है।

विनोद कुमार शुक्ल का जन्म एक जनवरी 1937 में छत्तीसगढ़ के राजनांदगाँव में हुआ था। उनका पहला कविता संग्रह 1971 में 'जय हिंद' शीर्षक से आया। इसके आठ साल बाद 1979 में उनका पहला उपन्यास 'नौकर की कमीज़' आया। इस उपन्यास ने न केवल शुक्ल के साहित्यिक जीवन को एक मोड़ दिया बल्कि कथा साहित्य को भी एक नया मोड़ दिया। इसी उपन्यास पर मणिकौल ने फिल्म बनाई। उनका एक अन्य महत्वपूर्ण उपन्यास है 'दीवार में खिड़की रहती थी'। विनोद कुमार शुक्ल को हिन्दी भाषा के महान समकालीन लेखकों में शुमार किया जाता है। उनके पास मौलिकता, विशिष्ट भाषाई बनावट, उत्कृष्ट शिल्प और भावनात्मक गहराई है। 2023 में अंतरराष्ट्रीय साहित्य में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिष्ठित पेन नाबोकोव लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते देखने के लिए उनके आवास पर कला और साहित्य जगत की प्रमुख हस्तियाँ मौजूद थीं। शुक्ल हिन्दी के बारहवें ऐसे लेखक है जिन्हें यह सर्वोच्च सम्मान दिया गया। शुक्ल पिछले कई सालों से बच्चों और किशोरों के लिए भी लिख रहे हैं। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि, 'मुझे बच्चों, किशोरों और युवाओं से बहुत उम्मीदें हैं। मैं हमेशा कहता रहा हूँ कि हर मनुष्य को अपने जीवन में एक किताब ज़रूर लिखनी चाहिए। अच्छी किताबें हमेशा साथ होनी चाहिए।' उन्होंने कहा कि किसी भी क्षेत्र में शास्त्रीयता को पाना है तो उस क्षेत्र के सबसे अच्छे साहित्य के पास जाना चाहिए।

आलोचना के विषय में भी उनकी राय साफ़ थी। उन्होंने कहा, किसी भी अच्छे काम की आलोचना अगर की जाती है तो उन

आलोचनाओं को अपनी ताक़त बना लो। आलोचना जो है, दूसरों का विचार है। जो उपयोगी भी हो सकता है और अनुपयोगी भी। किसी कविता की सबसे अच्छी आलोचना का उत्तर उससे अच्छी एक और नयी कविता को रच देना है। किसी काम की सबसे अच्छी आलोचना का उत्तर, उससे और अच्छा काम करके दिखाना होना चाहिए। उन्होंने कहा, साहित्य में ग़लत आलोचनाओं ने अच्छे साहित्य का नुक़सान ज्यादा किया है।

इस उपलब्धि पर विनोद कुमार शुक्ल ने भारतीय ज्ञानपीठ और सभी साहित्य प्रेमियों के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा, साहित्य मनुष्य को अपने भीतर झांकने की क्षमता देता है। लेखक का कर्तव्य है कि वह जीवन की छोटी रोशनियों को शब्दों में बांधते रहे।

सादगीपूर्ण इस आयोजन में शुक्ल ने अपनी एक कविता का भी पाठ किया:

सबके साथ
सबके साथ हो गया हूँ
अपने पैरों से नहीं
सबके पैरों से चल रहा हूँ
अपनी आँखों से नहीं
सबकी आँखों से देख रहा हूँ
जागता हूँ तो सबकी नींद से
सोता हूँ तो सबकी नींद में
मैं अकेला नहीं
मुझमें लोगों की भीड़ इकट्ठी है
मुझे ढूँढो मत
मैं सब लोग हो चुका हूँ
मैं सबके मिल जाने के बाद
आख़िर में मिलूँगा
या नहीं मिल पाया तो
मेरे बदले किसी से मिल लेना।